विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 36 : नई दिल्ली : 30 नवम्बर - 6 दिसम्बर 2018

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण सानंद सुखसातापूर्वक ससंघ तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों में विहरण कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा का प्रभाव जैन एवं जैनेतर समुदाय में स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है। जहां उत्तर भारत में सर्दी प्रारम्भ हो चुकी है, वहीं तमिलनाडु में गर्मी का अहसास हो रहा है। यदा-कदा वर्षा का मौसम भी दृश्यमान होता है। निर्धारित कार्यक्रमानुसार पूज्यप्रवर २८-२९ दिसम्बर को पाण्डिचेरी में पावन प्रवास करेंगे। कडलूर के द्विदिवसीय प्रवास में पूज्यप्रवर नववर्ष का मंगलपाठ सुनाएंगे, जिसके लिए हजारों श्रद्धालु उपस्थित होंगे, ऐसी संभावना है। आचार्यप्रवर कोयम्बत्तूर से पूर्व वर्धमान महोत्सव के लिए तिरुपुर में चार दिनों का प्रवास करेंगे। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ८ फरवरी २०१९ को १५५वें मर्यादा महोत्सव हेतु कोयम्बत्तूर में भव्य मंगल प्रवेश करेंगे। १०-१२ फरवरी को कोयम्बत्तूर में मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय समायोजन होगा।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

इत्वरिक अनशन का उदाहरण है चेन्नई

१९ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'अध्यात्म के क्षेत्र में तप को धर्म बताया गया है। तप वह चीज है, जिससे आत्मा के कर्म कटते हैं, पाप झड़ते हैं और चेतना निर्मल बनती है। जैसे अग्नि के योग से स्वर्ण का स्वरूप निखर जाता है, उसी प्रकार तप रूपी अग्नि आत्मा रूपी सोने को निखार देती है। तपस्या में शक्ति होती है। संवर के द्वारा नए सिरे से लगने वाले कर्मों के आगमन मार्ग को रोका जाता है और तपस्या पूर्व संचित कर्मों को नष्ट करती है।

तपस्या के मूलतः दो प्रकार हैं--बाह्य और आभ्यंतर। बाह्य तप से आभ्यंतर तप भी पुष्ट होता है। जिस तप का प्रभाव प्रधानतया बाहर दिखाई देता है, वह बाह्य तप है। बाह्य तप के छह प्रकार बताए गए हैं--अनशन, अवमोदरिका, भिक्षाचर्या, रसपरित्याग, कायक्लेश और प्रतिसंलीनता।

आहार के त्याग करने को अनशन कहते हैं। जीवन भर के लिए आहार छोड़ देना, यावत्कथिक अनशन और उपवास, बेला आदि तपस्या अर्थात् सीमित समय के लिए आहार का परित्याग इत्वरिक अनशन होता है। जैन शासन में दोनों प्रकार के अनशन होते हैं। इसका एक उदाहरण देखना हो तो चेन्नई को देखा जा सकता है। इस बार यहां मासखमण अथवा उससे अधिक दिनों की तपस्या के जितने आंकड़े आए हैं, वे अपने आप में एक उदाहरण हैं। लम्बी तपस्या करने से शरीर पर प्रायः असर आ जाता है। आहार बाहर की चीज होती है, उसे छोड़ देना बाहर से संबंधित (बाह्य) तप होता है।

२. अवमोदरिका--आहार, पानी, वस्त्र, कषाय आदि की अल्पता करना अवमोदरिका है। नवकारसी, पोरसी आदि भी अवमोदरिका के भेद हैं। साधना और स्वास्थ्य दोनों दृष्टि से अवमोदरिका लाभप्रद हो सकती है।

३. भिक्षाचर्या--विविध प्रकार के अभिग्रहों (प्रतिज्ञाओं) से भिक्षा ग्रहण करना भिक्षाचर्या है।

४. रसपरित्याग--घृत, दूध, दही आदि विकृतियों अर्थात् विगयों का परित्याग करना रसपरित्याग तप होता है।

५. कायक्लेश--हिंसा आदि से रहित कष्ट सहन करना कायक्लेश तप होता है। सिद्धासन, पद्मासन आदि लगाकर साधना करना कायक्लेश के प्रकार हैं।

६. प्रतिसंलीनता--इन्द्रियनिग्रह, योगनिग्रह, कषायनिग्रह और विविक्तशय्यासन प्रतिसंलीनता तप होता है।

कर्मों को काटने के लिए तपस्या की शरण में जाना होता है। उपवास आदि तप न हो सके तो अन्य तप का आलम्बन ले लेना चाहिए। ऊनोदरी तो कौन नहीं कर सकता। मनोबल और जिह्वा संयम हो तो ऊनोदरी तप हो सकता है। केवल खाने की ही नहीं, वस्त्रों और शब्दों की भी ऊनोदरी हो सकती है। आदमी अपनी जीवनचर्या के साथ बाह्य तप को भी जोड़े रखने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'अनेक-अनेक चारित्रात्माएं भी अनशन ग्रहण करती हैं और अनेक-अनेक श्रावक-श्राविकाएं भी अनशन ग्रहण करते हैं। अभी श्री मांगीलाल छाजेड़ (गंगाशहर) ने अनशन ग्रहण किया। वे मुनि राजकुमारजी के संसारपक्षीय पिता थे। वे यहां आए थे। यहां से जाने के बाद बीमारी का रूप सामने आया तो उन्होंने कहा कि मुझे इस अवस्था में ऑप्रेशन नहीं करवाना, मैं तो संथारा ही कर लेता हूं। वे जीवन के नवमें दशक में थे। उन्होंने अनशन कर लिया और आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ गए। मुझे अच्छा लगा कि उन्होंने जागरूक अवस्था में अनशन ग्रहण किया।'

बीदासर समाधिकेन्द्र में लावासरदारगढ़ की साध्वी अजितप्रभाजी हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार उनका अनशन प्रवर्धमान है। उन्हें तपस्या और अनशन ग्रहण किए हुए कई दिन हो गए। यह एक अच्छी बात है कि होश-हवास में अनशन ग्रहण कर आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ जाना।'

प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष श्री छत्रमल बैद, श्री गौतमचंद समदड़िया, श्री गौतमचंद धारीवाल, श्रीमती प्रमिला गोलछा और श्री एम. रमेश बोहरा ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। श्री महेन्द्र सिंघी ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। श्रीमती हंसा दसाणी गर्ग ने अपनी नवीन कृति 'एक चिट्ठी अनाम पते की' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित करते हुए अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

डॉक्टर से बीमारी और गुरु से गलती मत छुपाओ

२० नवम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'तपस्या के कुल बारह भेद होते हैं। उनमें छह बाह्य तप के प्रकार हैं और छह आभ्यंतर तप के प्रकार हैं। आभ्यंतर तप मूलतः भीतर से जुड़ा हुआ होता है। आभ्यंतर तप के छह भेद इस प्रकार हैं--

१. प्रायश्चित्त--दोष विशुद्धि के लिए जो क्रिया-अनुष्ठान किया जाता है, वह प्रायश्चित्त होता है। यह दोष विशुद्धि का प्रकार है। आदमी से गलती हो सकती है, व्रत में दोष लग सकता है। दोष के परिशोधन का उपाय है प्रायश्चित्त। प्रायश्चित्त आध्यात्मिक चिकित्सा और प्रायश्चित्त प्रदाता एक प्रकार के चिकित्सक होते हैं। आध्यात्मिक जगत् में दोष सेवन करने वाला एक प्रकार का मरीज होता है। कोई बीमारी दवा से ठीक हो सकती है तो किसी बीमारी के लिए शल्य चिकित्सा की भी अपेक्षा होती है। आध्यात्मिक जगत् में भी दो प्रकार के प्रायश्चित्त से चिकित्सा की जाती है। कुछ दोषों के लिए तप रूपी प्रायश्चित्त प्रदान किया जाता है तो किसी गलती के लिए छेद के रूप में (संयम पर्याय को कम करना) प्रायश्चित्त दिया जाता है। तप रूप प्रायश्चित्त औषध और छेद रूप प्रायश्चित्त शल्यक्रिया के समान है। ज्यादा बड़ी गलती हो जाती है तो नए सिरे से दीक्षा प्रदान की जाती है। प्रायश्चित्त के आलोचन आदि दस प्रकार हैं।

२. विनय--आशातना न करने एवं बहुमान करने को विनय कहते हैं। अर्हतों, सिद्धों, साधुओं और ज्ञान की भक्ति करना विनय है। विनय से भी कर्म कटते हैं।

३. वैय्यावृत्य--सेवा। किसी सेवा सापेक्ष साधु की अहोभाव से सेवा करना महान निर्जरा का कार्य हो सकता है।

४. स्वाध्याय--उचित समय एवं परिस्थितियों में अध्ययन करना स्वाध्याय है। स्वाध्याय से भी कर्म कटते हैं। वाचना, प्रच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा--स्वाध्याय के ये पांच प्रकार हैं। स्वाध्याय से भावों की निर्मलता बढ़ सकती है। ज्ञान परिपुष्ट बन सकता है और वह ज्ञान साधना में और सहायक बन सकता है।

५. ध्यान--एक अच्छे बिन्दु पर मन को केन्द्रित करना अथवा योगों का निरोध करना ध्यान साधना है।

६. व्युत्सर्ग--शरीर, कषाय आदि का उत्सर्ग करना भी व्युत्सर्ग तप है।

तपस्या कर्म काटने का उपाय है। तपस्या के साथ पुण्य बंध भी होता है, किन्तु पुण्यबंध की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए।

डॉक्टर से बीमारी और गुरु से गलती नहीं छुपानी चाहिए। छुपाने से इलाज और शुद्धि कैसे हो सकेगी। प्रायश्चित्त की प्रमुख पात्रता है--ऋजुता।

समणीवृंद ने पूज्यप्रवर के संघ प्रभावक 'चेन्नई चतुर्मास' की संपन्नता के संदर्भ गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल की ओर से श्रीमती संगीता आच्छा, प्रवास व्यवस्था समिति के अंतर्गत राजकीय संपर्क विभाग संयोजक श्रीमती माला कातरेला, केन्टीन संयोजक श्री अनिल सेठिया, मार्गदर्शक श्री सम्पत छल्लाणी और डॉ. श्री सोहनलाल गादिया ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। सुश्री माधुरी और टीना चोरड़िया ने मंगलभावना गीत का संगान किया।

महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस का जीवन-विज्ञान दिवस के रूप में समायोजन

२१ नवम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने छह ऋतुएं बताई हैं--प्रावृट्, वर्षा, शरद, हेमंत, बसंत और ग्रीष्म। एक वर्ष में छह ऋतुएं होती हैं। प्रत्येक ऋतु दो-दो महीनों की होती है। काल में परिवर्तन होता है। बारह माह की व्यवस्था मानों एक सुन्दर चक्र है।

प्रावृट् ऋतु आषाढ़ और श्रावण माह में होती है। वर्षा ऋतु भाद्रपद और आश्विन माह में होती है। शरद ऋतु कार्तिक और मार्गशीर्ष मास में होती है। हेमंत ऋतु पौष और माघ मास में होती है। बसंत ऋतु फाल्गुन तथा चैत्र में होती है तथा ग्रीष्म ऋतु बैशाख और ज्येष्ठ महीने में होती है। लौकिक व्याख्या में थोड़े अंतर से ऋतुओं का वर्णन मिलता है। ऋतुओं में परिवर्तन होता है। आदमी कभी गर्मी से परेशान होता है तो कभी सर्दी से आक्रान्त हो जाता है तो कभी उसे वर्षा से परेशानी हो सकती है। यह सृष्टि की व्यवस्था है कि ऋतु में परिवर्तन हो। ऋतुओं का अपना-अपना लाभ भी होता है। कभी गर्मी या सर्दी या वर्षा न हो तो कठिनाई भी हो सकती है। ऋतु परिवर्तन के साथ भोजन में भी परिवर्तन किया जा सकता है और ऋतु के अनुसार अपनी दिनचर्या, निशाचर्या, रहन-सहन पर भी ध्यान दिया जा सकता है।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी है। आज का दिन परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से जुड़ा हुआ है। आज के दिन परम पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी ने मुनिश्री नथमलजी (टमकोर) को 'महाप्रज्ञ' अलंकरण से नवाजा था। आज का दिन परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी तत्कालीन मुनिश्री नथमलजी स्वामी (टमकोर) का 'महाप्रज्ञ' अलंकरण प्राप्ति का दिन है। वे बाद में हमारे धर्मसंघ के अनुशास्ता बन गए थे, सरताज बन गए थे। गुरुदेव तुलसी को उनके रूप में एक ऐसा सुशिष्य प्राप्त हुआ, जिनमें दार्शनिकता थी, साधना थी, प्रवचन कला भी थी। ऐसे सुशिष्य को गुरुदेव तुलसी ने अपना उत्तराधिकारी बनाया। 'महाप्रज्ञ' अलंकरण प्रदान करने के कुछ महीने बाद ही उन्हें युवाचार्य अलंकरण से विभूषित कर दिया। युवाचार्य पद

की प्राप्ति के बाद उनका अलंकरण उनका नाम बन गया। मुनिश्री नथमलजी स्वामी (टमकोर) युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी बन गए।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी में प्रज्ञा थी। महाप्रज्ञ वह होता है, जिसकी प्रज्ञा महान होती है। गुरुदेव तुलसी के साए में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने जीवन-विज्ञान का प्रकटन किया। आज के दिन को 'जीवन-विज्ञान दिवस' के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। जीने की कला जीवन-विज्ञान है। जीवन-विज्ञान शिक्षा जगत के लिए एक अवदान है। शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों को विद्या ग्रहण करने का मौका मिलता है। उन्हें लौकिक विद्या के साथ अध्यात्म विद्या का प्रशिक्षण प्राप्त हो तो अन्य विद्याएं भी ज्यादा उपयोगी बन सकेंगी। जीवन-विज्ञान में विभिन्न प्रयोग करवाए जाते हैं।

विद्यार्थी के लिए शारीरिक विकास अपेक्षित होता है तो बौद्धिक विकास की भी अपेक्षा रहती है। उसके साथ मानसिक और भावात्मक विकास भी होना चाहिए। ये चारों विकास हो जाएं तो विद्यार्थी का सर्वांगीण या बहुअंगीन विकास हो सकता है।

परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपनी बौद्धिकता और भावात्मकता के बल पर एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लिया था। विद्या के क्षेत्र में वे काफी आगे बढ़े हुए थे। वे दार्शनिक के रूप में ख्याति प्राप्त बन गए थे। संस्कृत भाषा का उनका गहरा अध्ययन था। वे संस्कृत भाषा में आशु कविता कर लेते थे। उनमें प्रवचन कौशल भी था। उन्होंने प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान की बात बताई। प्रेक्षाध्यान भी व्यापकता को प्राप्त हुआ है और जीवन-विज्ञान अनेक विद्या संस्थानों से जुड़ा है। जीवन-विज्ञान के प्रयोगों के द्वारा विद्यार्थी की अर्हता को विकसित बनाने का प्रयास किया जा सकता है। मैं आज जीवन-विज्ञान के संदर्भ में परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और जीवन-विज्ञान का स्मरण करता हूं।'

डॉ. श्रीमती ज्योति मूथा, श्रीमती एकता चोरड़िया और श्री श्रेयांस भरसारिया ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। प्रवास व्यवस्था के अंतर्गत आवास व्यवस्था की ओर से श्री रेखचंद धोका, पुलिस व्यवस्था की ओर से श्री मूलचंद कोठारी, पंडाल व्यवस्था की ओर श्री राजेन्द्र भण्डारी, सुश्री निवृत्ति सेठिया, प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रकाश मूथा, श्रीमती उषा बोहरा, बालिका माही बोहरा ने भी अपनी हृदयोद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल-चेन्नई के चतुर्मास के दौरान स्वयं द्वारा किए गए कार्यों को 'चेन्नई एक्सप्रेस' के माध्यम से प्रस्तुति दी। डॉ. धर्मनारायण भारद्वाज ने अपनी नवीन पुस्तक 'साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का यात्रा साहित्य' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की। इस संदर्भ में श्री सवाईलाल पोखरणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज रात्रि में नोर्थ चेन्नई के जोइन्ट कमिश्नर श्री प्रेम आनंद सिन्हा ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

छह अवचनों से बचो

२२ नवम्बर। गत रात्रि में जारी रिमझिम वर्षा का दौरान आज प्रायः दिनभर जारी रहा। पूरे दिन में एक बार मात्र कुछ क्षणों के लिए ही वर्षा रुकी। इस कारण प्रायः साधु-साध्वियों की गोचरी आदि आज एक ही समय हो पाई।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने वचन के बारे में निर्देश प्रदान किया है कि निर्ग्रन्थ (साधु) और निर्ग्रन्थी (साध्वी) को छह अवचन बोलने कल्पते नहीं हैं। गर्हित वचन अवचन होता है। उसका प्रयोग निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थी को नहीं कल्पता। छह अवचन इस प्रकार हैं--

१. अलीक वचन-- अयथार्थ भाषा साधु-साध्वी को बोलनी कल्पती नहीं। झूठ बोलने के चार कारण बताए गए हैं--क्रोध, लोभ, भय और हास्य। भयवश भी गलत बात नहीं कहनी चाहिए। सत्य बोलने से डांट पड़े तो भी झूठ नहीं बोलना चाहिए। यहां डांट झेल लेंगे तो आगे डांट से बचाव हो सकेगा।

२. हीलित वचन-- अवहेलनायुक्त वचन हीलित वचन होता है। किसी को अपमानित, बदनाम करने के लिए कोई बात नहीं कहनी चाहिए।

३. खींसित वचन-- मर्मभेदी भाषा। किसी के मर्म की बात नहीं बोलनी चाहिए।

४. परुष वचन-- कठोर वचन। साधु को कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। साधु का धर्म है क्षमा रखना, शांति रखना।

५. अगारस्थित वचन-- गृहस्थ जैसी भाषा। वह मेरा भाई, वह मेरी मां, वह मेरे पिता आदि साधु को बोलना नहीं कल्पता। बोलना हो तो ऐसा बोला जा सकता है--मेरा संसारपक्षीय भाई, मेरी संसारपक्षीया बहन आदि।

६. उपशांत कलह की उदीरणा करने वाला वचन। जो बातें बीत गई, उन्हें पुनः दुर्भावनावश याद नहीं करना चाहिए। साधु को इन छह अवचनों के प्रयोग से बचने का प्रयास करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'किसी चारित्रात्मा को मजबूरी में न्यायालय में भी पेश होना पड़े तो वहां भी अलीक वचन नहीं कहना चाहिए। भले कुछ भी हो, गलत बात वहां भी नहीं कहनी चाहिए। साधु का धर्म समता है। दण्डित होने की स्थिति आ जाए तो भी साधु को अलीक वचन नहीं बोलना चाहिए।

किसी को बदनाम करने के लिए उसकी बात को फैलाने का प्रयास भी साधु को नहीं करना चाहिए। साधु को गुस्सा नहीं करना चाहिए। सामने वाला गुस्सा करे तो भी साधु को उपशांत रहना चाहिए।

ठाणं आगमाधारित प्रवचन शृंखला का समापन

पूज्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला का समापन करते हुए कहा--'मुझे चेन्नई के इस चतुर्मास के दौरान मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगम का वाचन करने का मौका मिला। 'ठाणं' आगम के स्वाध्याय और लोगों को उसके विषय में कुछ बताने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम 'ठाणं' के व्याख्यान का जो क्रम चला, उसे आज ससम्मान विदा दी जा रही है। 'ठाणं' आगम है। मैंने उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया। किसी-किसी स्थान की व्याख्या मुझे प्राप्त नहीं हुई तो मैंने अपनी ओर से उसकी व्याख्या का प्रयास किया हो सकता है। कहीं कोई आशातना हो गई हो तो 'तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने चतुर्दशी के प्रसंग में हाजरी का वाचन किया। तदुपरान्त मुनि ध्रुवकुमारजी, बालयोगी मुनि प्रिंसकुमारजी, मुनि शुभम्कुमारजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया।

प्रवास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जयंतीलाल सुराणा, पंडाल व्यवस्था की ओर से श्री राकेश मेहता, सेवा प्रभारी श्री सुरेश रांका, ऑडिट कमेटी के श्री सुरेश नाहर, श्री गौतमचंद डागा, श्री कमल आच्छा, श्री विमल संचेती, श्री महेन्द्र माण्डोत, डॉ. योगिता पुनमिया, श्री अशोक मूथा, सुश्री दिया आच्छा और श्री धनराज मालू ने चेन्नई चतुर्मास की सम्पन्नता के संदर्भ में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। जय तुलसी संगीत मण्डल और फॉर ए.एम. ग्रुप ने पृथक-पृथक गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। पूज्यप्रवर के संसारपक्षीय अनुज श्री श्रीचंद दुगड़ ने चेन्नई की चातुर्मासिक व्यवस्थाओं के संदर्भ में श्लाघात्मक विचाराभिव्यक्ति किए।

शासनश्री साध्वी रायकुमारीजी (जयपुर) की स्मृतिसभा

गत १८ नवम्बर को जयपुर में साध्वी रायकुमारीजी (जयपुर) का प्रयाण हो गया। उनके संदर्भ में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'साध्वी रायकुमारीजी संसारपक्ष में जयपुर के बांठिया परिवार से संबद्ध थीं। उन्होंने करीब बारह वर्ष की बालावस्था में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से साध्वी दीक्षा स्वीकार की। वे करीब आठ वर्षों तक साध्वी सुन्दरजी और करीब ६३ वर्षों तक अपनी संसारपक्षीया बहन साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर) के साथ रहीं। शासनगौरव स्व. साध्वी कमलूजी, शासनश्री स्व. साध्वी सूरजकुमारीजी और साध्वी पानकुमारीजी की वे संसापक्षीया सगी बहन थीं। तपस्या और स्वाध्याय में वे विशेष रुचि रखती थीं। वे चश्मे आदि के निर्माण की दृष्टि से हस्तकला में निपुण थीं। मैंने कटक मर्यादा महोत्सव के अवसर पर उन्हें 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया था।

विक्रम संवत् २०६४ में वे बीदासर समाधिकेन्द्र में स्थिरवासिनी हो गई थीं। उनके स्वास्थ्य में कठिनाई हुई तो उन्हें भिन्न सामाचारी में बीदासर से जयपुर ले जाया गया। वहां पहले से साध्वी उर्मिलाकुमारीजी का सिंघाड़ा था तो मैंने उनकी सेवा का दायित्व साध्वी उर्मिलाकुमारीजी के सिंघाड़े को सौंप दिया। करीब अट्‌ठासी वर्ष की अवस्था में वि.सं. २०७५ कार्तिक शुक्ला दशमी को प्रातः करीब ८.३५ पर जयपुर में साध्वी रायकुमारीजी (जयपुर) का देहांत हो गया। शासन में अखंड रूप में रहकर प्रयाण को प्राप्त होना मानों एक सफलता होती है। बीदासर में साध्वी शुभप्रभाजी और साध्वी संपूर्णयशाजी का सेवा दायित्व चल रहा है। मैं साध्वी रायकुमारीजी (जयपुर) की आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूं।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने इस संदर्भ में कहा--'साध्वी रायकुमारीजी शासन गौरव साध्वी कमलूजी की सबसे छोटी बहन थीं। वे संसारपक्षीय चार बहिनें दीक्षित थीं। चारों ही बहनें पहले साध्वी सुन्दरजी के पास रहीं। साध्वीश्री सुन्दरजी उनकी संसारपक्षीय मामा की बेटी बहन थीं। साध्वीश्री सुन्दरजी और साध्वीश्री धनकंवरजी संसारपक्षीय सगी बहन थीं। साध्वी सुन्दरजी हमारे धर्मसंघ की एक दाठीक, तत्त्वज्ञ और वरिष्ठ साध्वी थीं। उन्होंने अच्छी यात्राएं कीं और आचार्यों की दृष्टि की खूब आराधना की। शासन गौरव साध्वीश्री कमलूजी वर्षों तक गुरुकुलवास में रहीं और विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया। गुरुदेव तुलसी की दक्षिण यात्रा के दौरान गुरुकुलवासी साध्वियों की आज्ञा-आलोयणा का जिम्मा उन पर था। ऐसा प्रतीत होता है कि चारों ही बहनों ने कलाकार साध्वी के रूप में अपना स्थान बनाया।

साध्वीश्री रायकुमारीजी में विनम्रता थी, कर्मठता थी और कार्य कुशलता भी थी। उन्हें दो वर्ष तक गुरुकुलवास में रहने का अवसर भी प्राप्त हुआ। वे एक मिलनसार साध्वी थीं। इन वर्षों में वे अस्वस्थ थीं। अस्वस्थता की स्थिति में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने उनकी सेवा का बहुत ध्यान रखवाया। जयपुर में उनका प्रयाण हुआ। जहां उन्होंने जन्म लिया, वही उन्होंने अपने देह का उत्सर्ग कर दिया। उनकी आत्मा अपने गंतव्य की दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति करती रहे।'

साध्वी प्रमिलाकुमारीजी और साध्वी यशोमतीजी ने साध्वी रायकुमारीजी की स्मृति में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

चेन्नई में बनी रहे धार्मिकता की रमणीयता

२३ नवम्बर। चेन्नई चतुर्मास २०१८ का अंतिम दिन। आज भी वर्षा का दौर जारी था, जो करीब नौ बजे के आसपास कुछ समय के लिए रुका। उसके बाद पुनः कभी तेज तो कभी मंद रूप में वर्षा होती रही। यदा-कदा वह बंद भी हुई, इसलिए आज चारित्रात्माओं की गोचरी आदि में ज्यादा व्यवधान नहीं हुआ। हालांकि इन दो दिनों की वर्षा मानसून की वर्षा थी, किन्तु ऐसा लग रहा था कि पूज्यप्रवर के चतुर्मास की सम्पन्नता

के उपरान्त होने वाले विहार के संदर्भ में चेन्नईवासियों की अश्रुधारा वर्षा के रूप में बरस रही है।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत चेन्नई के श्रावक समाज द्वारा मंगलभावना का उपक्रम रहा। इस रूप में तेरापंथ वेलफेयर ट्रस्ट के चेयरमेन श्री देवराज आच्छा, अभातेयुप के सहमंत्री श्री रमेश डागा, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री धर्मचंद लूंकड़, महामंत्री श्री रमेश बोहरा, स्वागताध्यक्ष श्री प्यारेलाल पितलिया, कोषाध्यक्ष श्री ललित दुगड़, संगठन मंत्री श्री रमेश खटेड़, तेरापंथ महिला मंडल-चेन्नई की अध्यक्ष श्रीमती कमला गेलड़ा, मंत्री श्रीमती शांति दुधोड़िया, तेरापंथ युवक परिषद-चेन्नई के अध्यक्ष श्री भरत मरलेचा, मंत्री श्री मुकेश नवलखा, प्रवास व्यवस्था समिति के अंतर्गत बिजली विभाग के श्री महावीर गेलड़ा, भोजनालय के संयोजक श्री विनोद डांगरा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम-चेन्नई के अध्यक्ष श्री अनिल लूणावत, अणुव्रत समिति-चेन्नई के मंत्री श्री जितेन्द्र समदड़िया, 'अपना क्लब' की ओर से श्री प्रवीण कोठारी, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट-ट्रीप्लीकेन के श्री गौतम सेठिया, तेरापंथी सभा-तिरुवत्तूर के अध्यक्ष डॉ. सुरेश जैन, तेरापंथी सभा ट्रस्ट-मिंजूर की ओर से श्री महेन्द्र संचेती, तेरापंथ एजुकेशन एण्ड मेडिकल ट्रस्ट-साहूकारपेट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री इंदरचंद डूंगरवाल, महामंत्री श्री गौतमचंद डागा और श्री मदनचंद मरलेचा ने पूज्यचरणों में अपनी आस्थासिक्त मंगलभावना अर्पित की। तेरापंथ कन्या मंडल ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा कन्या मंडल के संदर्भ में चतुर्मास की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। प्रवास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जयंतीलाल सुराणा ने श्रावक समाज की ओर से सामूहिक रूप में पूज्यप्रवर से क्षमायाचना के क्रम को संपादित किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में 'कुमारश्रमणकेशी और राजा प्रदेशी' के वृत्तांत को सुनाकर कहा--'हमने चेन्नई में चतुर्मास किया। इस स्थान का और इसके आसपास का माहौल रमणीय बन गया था। कल हमें यहां से विदा लेनी है। अभी यह रमणीय है, हमारे जाने के बाद इतना रमणीय तो नहीं रहेगा, यह तो मैं भी मानता हूं, किन्तु चेन्नई के लोगों के मन में धार्मिकता की रमणीयता यथासंभव रहे। ज्ञान, ध्यान, नैतिकता के संस्कार बने रहें, जितना हो सके आत्मा में रमण करते रहें। चेन्नई चतुर्मास सम्पन्नता की ओर है। लोगों ने लाभ लिया है। चेन्नई के तेरापंथ श्रावक समाज में धार्मिकता के संस्कार रहें और आगे से आगे यथासंभव पुष्ट होते रहें। जनता में चित्तसमाधि रहे, मंगलमय माहौल रहे। लोगों ने खमतखामणा किए हैं, हमारी किसी बात से किसी को कुछ अप्रिय लगा हो तो हम भी चेन्नईवासियों से खमतखामणा करते हैं।'

कार्यक्रम में बेंगलुरु चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के लोगो का लोकार्पण किया गया। तदुपरान्त बेंगलुरु प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मूलचंद नाहर ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

गत दो-तीन दिनों से पूज्यप्रवर के चेन्नई चतुर्मास की सम्पन्नता का समय निकट जानकर चेन्नई व उसके आसपास के अन्य जैन तथा जैनेतर लोगों के आवागमन का क्रम काफी बढ़ गया। आज तो प्रायः दिन भर जैन एवं जैनेतर दर्शनार्थियों का हुजूम उमड़ा रहा। पूज्यप्रवर के चरणस्पर्श हेतु निर्धारित समय से काफी पहले ही दर्शनार्थियों की लम्बी कतार लग गई। लोग आचार्यप्रवर के चरणों का स्पर्श धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। पूज्यप्रवर के मुख मंडल की तेजस्विता और सौम्यता अन्य जैन लोगों को अनयास आकृष्ट कर रही थी, वहीं चतुर्मास की भव्य व्यवस्थाएं उन्हें मानों दांतों तले अंगुली दबाने को विवश कर रही थी। चतुर्मास के अंतिम दिन भी चतुर्मास स्थल परिसर में हजारों की भीड़ देखकर लोग चकित थे।

चेन्नई चतुर्मास में ज्ञानाराधना के उपक्रम

चेन्नई चतुर्मास के दौरान ज्ञानाराधना आदि के उपक्रम आदि भी काफी व्यवस्थित रूप में चले। उनकी संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है--

- परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में अनेक कक्षाएं चलीं, जिनमें आचार्यप्रवर ने स्वयं प्रशिक्षण प्रदान किया। आचार्यप्रवर ने मुमुक्षु बहनों को कई 'अष्टकम्' के अर्थ की वाचना प्रदान की। तत्पश्चात् समणीवृंद और मुमुक्षु बहनों को 'समयसार' ग्रंथ और 'भ्रमविध्वंसनम्' (आंशिक) का भी वाचन करवाया। चतुर्मास के पूर्व से जारी तत्वार्थ भाष्ययानुसारिणी टीका के वाचन का क्रम चतुर्मास के दौरान भी यथावत चला। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, मुख्यमुनिश्री, साध्वीवर्याजी एवं अन्य चारित्रात्माओं व समणीवृंद ने पूज्यप्रवर के मुखारविंद से संस्कृत भाषा के इस ग्रंथ की वाचना प्राप्त कर अहोभाव की अनुभूति की। पूज्यप्रवर लंबे अरसे से मुख्यमुनिश्री और साध्वीवर्याजी को भगवती जोड़ की वाचना प्रदान कर रहे हैं। चतुर्मास के दौरान भगवती जोड़ खण्ड-१ का वाचन क्रम संपन्न हुआ और खण्ड-२ का वाचन क्रम शुरू हो गया। सन्मति शिक्षण कक्षा के छात्र मुनियों को भी पूज्यप्रवर चतुर्मास के पूर्व से 'अनुकंपा की चौपई' का प्रशिक्षण प्रदान कर रहे थे। चतुर्मास के दौरान उसका वाचन सम्पन्न हुआ तो पूज्यप्रवर ने 'नव पदार्थ की चौपई' की वाचना देनी प्रारम्भ कर दी। सूर्योदय के कुछ समय पश्चात् जब साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां पूज्य सन्निधि में पहुंचती हैं, तब आचार्यप्रवर ने बाल साध्वियों में से प्रतिदिन क्रमशः एक साध्वी से निर्धारित एक ग्रन्थ का श्लोक और उसका अर्थ सुनते हैं और यदा-कदा उस संदर्भ में प्रेरणा, प्रशिक्षण और पथदर्शन भी प्रदान करते हैं। यह क्रम लंबे समय से चल रहा है। चतुर्मास के पूर्व से चला आ रहा 'पंचसूत्रम्' के प्रशिक्षण का क्रम सम्पन्न हुआ तो पूज्यप्रवर ने आलम्बन सूत्र का क्रम प्रारम्भ करवा दिया। पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में प्रतिदिन नियमित रूप में आगम वाचन का क्रम भी कई वर्षों से चल रहा है। इस उपक्रम में कुछ संत संभागी बनते हैं। चतुर्मास के पूर्व से 'नंदी' के वाचन का क्रम चल रहा था, उसकी संपूर्णता के उपरान्त 'अनुयोग द्वार' के वाचन का क्रम प्रारम्भ हो गया।
- मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन किए। पूज्यप्रवर के मुखारविंद से निसृत होने वाले 'ठाणं' के पहले, दूसरे और छठे स्थान पर आधारित प्रवचन जनता के लिए आकर्षण का विषय रहे। आचार्यप्रवर ने चतुर्मास के कई दिनों तक 'मुनिपत के आख्यान, का भी वाचन किया। विभिन्न कथानकों से युक्त इस आख्यान को सुनने की उत्सुकता श्रद्धालुओं में निरंतर बनी रही। पूज्यप्रवर की सन्निधि में प्रायः मुख्य प्रवचन कार्यक्रमों का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।
- मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व बहुधा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी द्वारा 'कालूयशोविलास' का सरस एवं रोचकशैली में वाचन किया गया। यदि किसी दिन किसी कारण से साध्वीप्रमुखाजी का पदार्पण नहीं हो पाया तो उपदेश का दायित्व मुख्यमुनिश्री ने संभाला। अन्यथा मुनि दिनेशकुमारजी ने इस दायित्व का निर्वहन किया। साध्वीप्रमुखाजी से पूर्व साध्वी प्रमिलाकुमारीजी ने उपदेश देने में अपने श्रम का नियोजन किया।
- प्रायः संपूर्ण चतुर्मास में मध्याह्न में भी व्याख्यान का क्रम चला, जिसके अंतर्गत श्रावण मास में साध्वी रचनाश्रीजी, भाद्रपद मास में साध्वी काव्यलताजी, आश्विन मास में साध्वी प्रज्ञाश्रीजी और कार्तिक मास में साध्वी प्रियंवदाजी ने व्याख्यान दिया।
- रात्रिकालीन व्याख्यान 'सत्संग' का दायित्व मुनिवृंद पर रहा। सत्संग में मुनि अमृतकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर) और मुनि वर्धमानकुमारजी के वक्तव्य हुए।
- प्रायः प्रति रविवार प्रातः दस बजे से ग्यारह बजे तक छह से बारह और बारह से चौबीस वर्ष तक के बालकों के लिए 'स्प्रिच्युअल टॉनिक' नाम से दो पृथक्-पृथक् कक्षाओं का आयोजन हुआ। जिसमें मुनि योगेशकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि अक्षयप्रकाशजी, मुनि गौरवकुमारजी, मुनि अनेकांतकुमारजी,

मुनि वर्धमानकुमारजी और मुनि सत्यकुमारजी ने बालकों को जैन धर्म, तेरापंथ के सिद्धान्तों आदि का प्रशिक्षण दिया।

- प्रायः प्रति रविवार को मध्याह्न में दो बजे से तीन बजे तक 'डॉयलाग विथ मोंक्स' कक्षाओं के माध्यम से जीवनशैली और व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से प्रशिक्षण देने का क्रम रहा, जिसके अंतर्गत मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी और मुनि सुधाकरजी ने प्रशिक्षण दिया।
- प्रायः प्रति रविवार को कन्याओं के लिए प्रातः ९.३० से १०.३० बजे तक जैन दर्शन आदि पर आधारित कक्षाएं समायोजित हुईं। प्रशिक्षक साध्वियों के नाम इस प्रकार हैं--साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, साध्वी ऋद्धियशाजी, साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी, साध्वी प्रांजलयशाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी, साध्वी शरदयशाजी, साध्वी समताप्रभाजी, साध्वी ऋद्धिप्रभाजी और समणी ऋजुप्रज्ञाजी।
- साध्वीवृंद के निर्देशन में महिलावर्ग में कंठस्थ का उपक्रम भी अच्छे रूप में रहा। इसके अंतर्गत सौ से अधिक बहनों ने पच्चीस बोल, करीब अस्सी बहनों ने भक्तामर, पचास बहनों ने प्रतिक्रमण, पचास बहनों ने तत्त्वचर्चा, पचास बहनों ने पच्चीस बोल की चतुर्भंगी, बीस बहनों ने कल्याण मंदिर, दस बहनों ने विभिन्न अष्टकम्, दस बहनों चौबीसी, तेरह बहनों ने बावन बोल, पन्द्रह बहनों ने इक्कीस द्वार, पन्द्रह बहनों ने संजय नियंठा, नौ बहनों ने लघुदण्डक, सात बहनों ने अर्हत वन्दना, पांच बहनों ने तेरापंथ प्रबोध, चार बहनों ने चतुर्विंशतिगुणगेयगीतिः दो बहनों ने शान्तसुधारस भावना तथा एक-एक बहन ने गतागत, कर्म प्रकृति, विकास की वर्णमाला, संस्कार बोध और आचार बोध कंठस्थ किए। इस संदर्भ में शारदाश्रीजी, साध्वी आस्थाश्रीजी, साध्वी रचनाश्रीजी, साध्वी जयविभाजी, साध्वी सुमतिप्रभाजी, साध्वी तन्मयप्रभाजी, साध्वी कौशलप्रभाजी, साध्वी चन्द्रिकाश्रीजी, साध्वी वैभवयशाजी, साध्वी कार्तिकयशाजी, साध्वी ख्यातयशाजी, साध्वी मैत्रीयशाजी, साध्वी प्रतीकप्रभाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी और साध्वी शरदयशाजी ने अपने श्रम का नियोजन किया।
- महिला वर्ग के लिए प्रति सप्ताह पांच दिन आयोजित बारहव्रत/चौदह नियम पर आधारित कक्षाओं में साध्वी सुषमाकुमारीजी और साध्वी सरलप्रभाजी, पच्चीस बोल : गहन विवेचन व प्रति शनिवार आयोजित 'प्रेक्टिकल तत्त्वज्ञान' कक्षा में साध्वी चैतन्यप्रभाजी, प्रति शनिवार आयोजित 'पर्सनलिटि डवलप्मेन्ट' कक्षा में साध्वी जयन्तयशाजी, 'तत्त्वज्ञान : शंका-समाधान' कक्षा में साध्वी प्रांजलयशाजी, प्रति रविवार ज्ञानशाला के रूप में आयोजित कक्षा में साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी और साध्वी ऋद्धियशाजी एवं संस्कृत भाषा के अध्ययन की कक्षा में समणी संबोधप्रज्ञाजी ने प्रशिक्षण दिया। कालूयशोविलास व चौबीसी की रागें सिखाने में साध्वी शारदाश्रीजी का श्रम नियोजित हुआ।
- चतुर्मास के दौरान प्रेक्षाध्यान की कक्षाएं भी नियमित रूप से चलीं। प्रातः करीब ८.०० से ८.५० बजे तक सभी लोगों के लिए ध्यान का प्रयोग करवाया जाता, जिसमें आचार्यप्रवर की आवाज में रिकॉर्ड ऑडियो का उपयोग किया जाता। जिज्ञासा-समाधान आदि के संदर्भ में वहां प्रायः प्रतिदिन मुनि कुमारश्रमणजी अथवा मुनि अनेकांतकुमारजी उपस्थित रहते। महिला वर्ग के लिए अलग से भी प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए जाते, जिसमें श्रावण-भाद्रपद माह में साध्वी राजुलप्रभाजी और आश्विन मास में साध्वी शुभ्रयशाजी ने प्रशिक्षण का दायित्व निभाया।
- चतुर्मास के दौरान कई मुमुक्षु बहनों को चेन्नई में रहकर उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। उनके प्रशिक्षण में पदासीन चारित्रात्माओं के सिवाय साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, साध्वी प्रांजलयशाजी और साध्वी प्रबुद्धयशाजी ने अपने श्रम का नियोजन किया।

- पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल के समीप अणुविभा द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी किड्जोन की व्यवस्था रही, जो बच्चों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुई। किड्जोन की व्यवस्थाओं में प्रवास व्यवस्था समिति की भी सहभागिता रही। प्रायः प्रति रविवार वहां मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने बालकों को और साध्वी प्रांजलयशाजी ने बालिकाओं को विविध विषयों का प्रशिक्षण दिया।
- जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित जैन विद्या परीक्षाओं के संदर्भ में साध्वी सुमंगलप्रभाजी, साध्वी ऋद्धियशाजी और साध्वी ऋद्धिप्रभाजी ने महिला वर्ग को प्रशिक्षण दिया।
- अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान पाठ्यक्रम के संदर्भ में साध्वी आस्थाश्रीजी, साध्वी कौशलप्रभाजी, साध्वी चन्द्रिकाश्रीजी, साध्वी मीमांसाप्रभाजी, साध्वी प्रांजलयशाजी और साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने प्रशिक्षण दिया।
- जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित भगवई भाग-१ पर आधारित 'आगम मंथन प्रतियोगिता' के संदर्भ में करीब दो माह तक प्रशिक्षण का क्रम चला, जिसमें मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर), मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि मननकुमारजी, मुनि अक्षयप्रकाशजी, मुनि आकाशकुमारजी, मुनि शुभंकरजी तथा मुनि सत्यकुमारजी ने पुरुषों व साध्वी प्रबुद्धयशाजी ने महिला वर्ग को प्रशिक्षण दिया।
- अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में ३० अगस्त से आयोजित पच्चीस बोल पर आधारित नवदिवसीय जैन विद्या कार्यशाला में मुनि अमृतकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर), मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि सुधाकरजी, मुनि मननकुमारजी और मुनि सत्यकुमारजी ने प्रशिक्षण का दायित्व निभाया।
- तेरापंथ युवक परिषद-चेन्नई के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा १८ अगस्त से नौ शनिवार तक मध्याह्न में करीब २.१५ से २.४५ बजे तक जैन कथा बोध कार्यशाला आयोजित हुई। संभागी किशोरों को मुनि दीपकुमारजी, मुनि अनेकांतकुमारजी, मुनि ध्रुवकुमारजी और मुनि सत्यकुमारजी ने प्रशिक्षण दिया।
- तेरापंथ महिला मंडल-चेन्नई के द्वारा आयोजित 'व्यक्तित्व विकास-संघ विकास' कार्यशाला में संभागी बहनों को शासन गौरव साध्वी कल्पलताजी ने प्रशिक्षण दिया।
- जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में आयोजित नवदिवसीय 'प्रेक्षा लाइफ स्किल' कार्यशाला दो बार समायोजित हुई। प्रथम कार्यशाला में साध्वी समताप्रभाजी और साध्वी ऋद्धिप्रभाजी तथा द्वितीय कार्यशाला में समणी विनयप्रज्ञाजी ने प्रशिक्षण दिया।
- तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की चेन्नई शाखा द्वारा कई रविवार के दिन संबोध कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर), मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि सुधाकरजी, मुनि वर्धमानकुमारजी और मुनि सत्यकुमारजी ने प्रशिक्षण का दायित्व निभाया।
- ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण में साध्वी ज्योतियशाजी, साध्वी वैभवयशाजी, साध्वी सुदर्शनप्रभाजी और साध्वी सुमंगलप्रभाजी ने अपने श्रम का नियोजन किया।

चेन्नई चतुर्मास में तपःआराधना

परम पूज्य आचार्यप्रवर के चेन्नई चतुर्मास-प्रवास के दौरान तपः आराधना प्रचुर रूप में हुई। जहां ५७ मासखमण अथवा उससे अधिक दिनों की तपस्या का कीर्तिमान बना, वहीं अन्य तपस्याएं भी काफी हुईं। तपस्याओं के प्राप्त आंकड़े इस प्रकार हैं---

मासखमण अथवा उससे अधिक - ५७

पुरुष वर्ग

ग्यारहरंगी	-	१
नवरंगी	-	२
अठाई अथवा उससे अधिक (ग्यारहरंगी व नवरंगी सहित)		करीब ३०० से अधिक
प्रवेश के तेले	-	३४५

महिला वर्ग

ग्यारहरंगी	-	२
सतरंगी	-	१
इक्कीस से पच्चीस दिन	-	६
बारह से पन्द्रह दिन	-	११
ग्यारह दिन	-	६६ (ग्यारहरंगी सहित)
दस दिन	-	२१ (ग्यारहरंगी सहित)
नौ दिन	-	७० (ग्यारहरंगी सहित)
अठाई	-	१०४ (ग्यारहरंगी सहित)
प्रवेश के तेले	-	६९१
उपवास की बारियां	-	३८

स्मृति संबल

- कटार निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री शंकरलालजी गन्ना (सुपुत्र श्री सुवालालजी गन्ना) का देहावसान हो गया। प्रतिदिन दो सामायिक का नियम जिन्दगी भर निभाया। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन करते थे। अग्रिम वर्ष में बेंगलुरु चतुर्मास में सेवा-उपासना की चाह मन में ही रह गई। बेंगलुरु तुलसी चेतना केन्द्र के ट्रस्टी के रूप में अपनी सेवाएं दीं। पूरे गन्ना परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार है।
- आसीन्द निवासी श्री रोड़मलजी कावड़िया (सुपुत्र स्व. श्री बादरमलजी कावड़िया) का देहावसान हो गया। वे सरल स्वभावी श्रावक थे। प्रतिदिन दो सामायिक किया करते थे। आसीन्द तेरापंथी सभा के सक्रिय कार्यकर्ता थे। कावड़िया परिवार संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित परिवार है।
- ब्यावर निवासी चेन्नई प्रवासी श्रीमती रजनी दूगड़ (धर्मपत्नी श्री पुखराजजी दूगड़) का देहावसान हो गया। वे सरल, हंसमुख, विनम्र, मिलनसार एवं गृहीत दायित्व के प्रति जागरूक रहने वाली बारहव्रती श्राविका थी। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन व चारित्रात्माओं के रास्ते की सेवा में जागरूक रहती थी। तपस्या के क्रम में उन्होंने ११ तक की लड़ी, एक वर्षीतप, मासखमण आदि तपस्या कर आत्म-निर्जरा की। महिला मंडल ब्यावर की अध्यक्षा एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल में उपमंत्री के रूप में संघ को सेवाएं प्राप्त हुई। चेन्नई महिला मंडल एवं ज्ञानशाला में सक्रियतापूर्वक योगदान देती थी। कुछ दिनों पूर्व ही पूज्यप्रवर की सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा उन्हें श्राविका गौरव अलंकरण प्राप्त हुआ। चेन्नई चतुर्मास में पूज्यप्रवर की सेवा-उपासना का अच्छा लाभ प्राप्त हुआ। पूरे दूगड़ परिवार में संघ एवं संघपति के प्रति अटूट आस्था है।
- आमेट निवासी चेन्नई प्रवासी श्री किरणकुमार गांधी (सुपुत्र श्री पुखराजजी गांधी) का देहावसान हो गया। वह सरल स्वभावा वाला श्रावक था। चेन्नई चतुर्मास में प्रायः गुरुदर्शन, सेवा-उपासना का लाभ लेता था। अचानक हृदयाघात के कारण अल्पायु में दिवगंत हो गया। परिवार ने इस विषम परिस्थिति में दृढ़ मनोबल

का परिचय दिया। पूरे गांधी परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार है।

- डीडवाना निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती तारादेवी सिंघवी (धर्मपत्नी मानिकचन्दजी सिंघवी) का देहावसान हो गया। वे अच्छी कार्यकत्री श्राविका थी। आचार्यप्रवर के कोलकाता चतुर्मास में बीमारी की अवस्था में भी पूर्ण जागरूकता से सेवा का लाभ उठाया। पूरे सिंघवी परिवार में अच्छा श्रद्धा-भाव है।
- आसीन्द निवासी चिकमंगलूर प्रवासी श्रीछगनलाल गोखरू (सुपुत्र-स्व. श्रीनाथूलाल गोखरू) का निधन हो गया। वे सरल स्वभावी, स्वाध्यायी, ध्यानी, आत्मार्थी, तत्त्वज्ञानी एवं सुपात्रदान की तीव्र भावना वाले श्रावक थे। ३३ वर्ष की अवस्था में सजोड़े शीलव्रत को अंगीकार किया। वे जमींकंद वर्जन, रात्रि भोजन परिहार रखने वाले बारहव्रती श्रावक थे। स्वस्थ रहने की अवस्था तक प्रतिवर्ष दर्शन एवं कम से कम एक माह सेवा-उपासना का लाभ लेते थे। पूज्यप्रवर से उन्हें श्रद्धानिष्ठ श्रावक का अलंकरण प्राप्त हुआ। प्रेक्षाध्यान के प्रति गहरा लगाव था। 'सादा जीवन उच्च विचार' युक्ति को जीवन में उतार कर समाज में विशिष्ट श्रावक के रूप में पहचान बनाई। धर्मपत्नी का भी उन्हें भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ, जो स्वयं धर्म-ध्यान में रहने की साधना कर रही है। दोनों पुत्र धर्मसंघ की सभा-संस्थाओं में सक्रियतापूर्वक जुड़े हुए हैं। पूरे गोखरू परिवार में धर्म के गहरे संस्कार हैं।
- जैतपुरा निवासी भायंदर प्रवासी श्री मनोहरलाल मेहता (सुपुत्र श्री भेरुलालजी मेहता) का निधन हो गया। वे एक अच्छे श्रावक कार्यकर्ता थे। भायंदर तेयुप में अध्यक्ष एवं सभा में उपाध्यक्ष के रूप में उनकी सेवाएं प्राप्त हुईं। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन का क्रम रहा। अठाई एवं तेरह की तपस्या कर आत्मविशोधन किया। पूरे मेहता परिवार में संघसेवा के प्रति जागरूकता है।
- सरदारशहर निवासी हैदराबाद/राजमुंदरी प्रवासी श्रीमती जतनदेवी सेठिया (धर्मपत्नी स्व. श्री करणीदान सेठिया) का देहावसान हो गया। वह शांत और सरल स्वभाव वाली निर्मल हृदय एवं धर्म के प्रति आस्थाशील महिला थीं। प्रतिदिन दो सामायिक तथा रात्रि भोजन विरमण एवं जमींकंद वर्जन का नियम यावज्जीवन निभाया। शरीर स्वस्थ रहने तक प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं सेवा-उपासना का लाभ लिया। पूज्यप्रवर द्वारा श्रद्धा की प्रतिमूर्ति अलंकरण प्राप्त हुआ। पूरे सेठिया परिवार में संघ समर्पण के भाव हैं।
- सुजानगढ़ निवासी चास-बोकारो प्रवासी श्री चंपालाल चोरड़िया (सुपुत्र स्व. पृथ्वीराजजी चोरड़िया) का निधन हो गया। वे सरल प्रकृति वाले, उपशांत कषायी, अल्पभाषी, मृदुभाषी व्यक्तित्व के धारक थे। चतुर्मासकाल में रात्रि भोजन विरमण का एवं प्रतिदिन एक सामायिक किया करते थे। स्वस्थ रहने की अवस्था में आसपास विचरणशील चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा में संलग्न रहते थे। वृद्धावस्था की अवस्था में पिछले पांच-सात सालों में जप-साधना में संलग्न हो गए थे। पूरे चोरड़िया परिवार में संघ एवं संघपति के प्रति अटूट श्रद्धाभाव है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६ नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- ११०००२ से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला